Q:- Explain McClelland's Theory of Need in detail.

मैक क्लीलैंड के आवश्यकता सिद्धान्त का सविस्तार वर्णन करें।

Ans:- कार्य-अभिप्रेरण का आवश्यकता सिद्धान्त मैक क्लीलैण्ड तथा उनके सहयोगियों (1961) द्वारा किए गए शोधों पर आधारित है। इस सिद्धान्त में किसी भी संगठनात्मक परिस्थिति में तीन तरह की आवश्यकताओं को कार्य-अभिप्रेरण के लिए महत्वपूर्ण माना गया है- उपलब्धि-आवश्यकता, शक्ति की आवश्यकता और संबंधन की आवश्यकता। इनमें सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि आवश्यकता को माना गया है। 1950 वाले दशक में इन लोगों द्वारा उपलब्धि-आवश्यकता के क्षेत्र में गहन अध्ययन किया गया और इसके प्रत्येक पहलू पर ध्यान दिया गया। इनके मतानुसार जिन कर्मचारियों या व्यवसाय कार्यपालकों में अपना कार्य ठीक ढंग से करने तथा अपनी कार्य-प्रतिभा को बढ़ाकर अधिक-से अधिक उपलब्धि श्रेष्ठता प्राप्त करने का गुण होता है उन्हें अपनी उपलब्धियों से अधिक संतुष्टि होती है और वे उन सभी कार्यों में श्रेष्ठता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, जिन्हें वे करते हैं। मैक क्लीलैंड (1961) द्वारा कई व्यवसाय प्रबंधकों पर अध्ययन किया गया और इन्होंने ने अपने अध्ययन में पाए कि सफल व्यवसाय प्रबंधकों की उपलब्धि-आवश्यकता असफल व्यवसाय प्रबंधकों की उपलब्धि-आवश्यकता से अधिक है।

इस सिद्धान्त के अनुसार कार्य-परिस्थिति में कोई भी प्रबंधक या अन्य कर्मचारी कार्य करने के लिए इसलिए प्रेरित होता है कि उसमें उपलब्धि-आवश्यकता मौजूद होती है। अतः, उपलब्धि आवश्यकता अपने-आपमें एक प्रेरक कारक होती है। जिन कर्मचारियों या

K. Nand M.A. 4th Sem's

6 (2)

या अधिक होने से यह अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता है कि वह अमुक परिस्थिति में किस तरह का कार्य-व्यवहार करने के लिए प्रेरित होगा।

(ii) कुछ आलोचकों का मत है कि मात्र व्यक्तिगत भीतरगुण जैसी आवश्यकताएँ द्वारा कार्य-परिस्थिति में व्यक्तियों के व्यवहार में होने-वाली भिन्नता की व्याख्या नहीं हो पाती है, क्योंकि परिस्थिति की विशेषताओं से भी कार्य-व्यवहार मे होनेवाली भिन्नता की व्याख्या होती है। इस सिद्धान्त में परिस्थिति की विशेषताओं की उपेक्षा की गई है।

(iii) कुछ आलोचकों का मत है कि व्यक्ति की उपलब्धि-आवश्यकता के मापन के लिए जो साधन उपलब्ध हैं, वे अधिक विश्वसनीय एवं वैध नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में इस सिद्धान्त के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना संभव नहीं है।

इन आलोचनाओं के बावजूद आवश्यकता-उपलब्धि सिद्धान्त की उपयोगिता काफी है, क्योंकि जिन प्रबंधकों, पर्यवेक्षकों तथा कर्मचारियों में इस आवश्यकता की प्रचुरता तथा प्रचण्डता होती है, उनका कार्य-व्यवहार आवश्यक रूप से अधिकतर हालातों में प्रशंसनीय होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मैक क्लिलैण्ड का उपलब्धि आवश्यकता सिद्धान्त कंपनियों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के प्रबंधकों एवं कर्मचारियों के लिए आज भी लोकप्रिय है।

The end